परिचय

निरंतर जेंडर और शिक्षा संदर्भ समूह के रूप में काम करनेवाली संस्था है, जिसकी स्थापना 1993 में हुई। निरंतर संस्था शिक्षा द्वारा महिलाओं के सशक्तीकरण का काम करती है– महिलाओं तक सूचना पहुँचाती है, साक्षरता को बढ़ावा देती है, शिक्षा और जेंडर के आयामों को जोड़ती है। यह काम संस्था क्षेत्रस्तरीय पहल, शिक्षण सामग्री निर्माण, प्रशिक्षण और शोध एवं पैरवी के ज़रिए करती है।

निरंतर द्वारा कई तरह की जेंडर संवेदनशील पठन पाठन सामग्री का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका, अखबार, पाठ्यचर्या, विश्लेषणात्मक दस्तावेज़, रिपोर्ट, किताब आदि के रूप में यह सामग्री प्रकाशित की जाती है। रोचक और आसान भाषा में तैयार यह सामग्री जानकारी देनेवाली तो है ही, पढ़ने का भरपूर आनंद भी देती है। शोध और अनुभव की झलक इसमें देखी जा सकती है। साथ ही, निरंतर कई स्तर पर स्कूली किताबों को तैयार करने की प्रक्रिया में भी शामिल रहा है।

निरंतर की प्रकाशन सामग्री का संदर्भ सामग्री के रूप में कार्यकर्ताओं, छात्रों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों, प्रशिक्षकों, अनुप्रेरकों और शिक्षाविदों द्वारा विभिन्न तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। हमारे कई प्रकाशन विशेष रूप से नवसाक्षरों और उन पाठकों के लिए हैं जिनकी साक्षरता का स्तर कम है।

प्रकाशन सामग्री की प्रस्तावित सहयोग राशि उनके शीर्षक के साथ दी गई है। इन्हें मँगवाने के लिए कृपया सहयोग राशि, डिमांड ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर द्वारा निरंतर ट्रस्ट के नाम भेजें। डाक खर्च आपको वहन करना होगा।

निरंतर प्रकाशन सूची

किताबें

जेंडर और शिक्षा रीडर, भाग 1 और 2

(*200 रूपए प्रति खण्ड)

जेंडर और शिक्षा पर ये दो रीडर पहली बार जेंडर के नज़रिए से शिक्षा पर लेख, कहानी, आत्मकथा और नीति सम्बन्धी दस्तावेज़ों को साथ ला रहे हैं। उपलब्ध सामग्री का गुणवत्ता पर समझौता किए बिना अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद किया गया है। इस तरह की सामग्री हिंदी में बहुत कम उपलब्ध है। विद्यार्थियों, शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और उन सभी लोगों द्वारा इसका प्रयोग किया जा सकता है जो जेंडर और शिक्षा विषय पर रूचि रखते हैं।

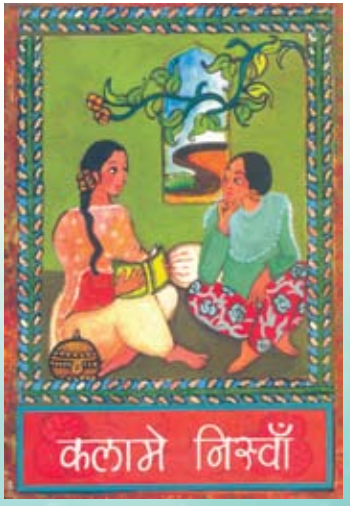

कलामे निस्वाँ (*395 रुपए)

मुसलमान महिलाओं के शिक्षा के मुद्दों को गहराई से समझने के लिए हमने पिछली सदी में मुस्लिम महिलाओं द्वारा लेखन पर खोजबीन की और उनके द्वारा विभिन्न उर्दू प्रकाशनों में किए गए लेखन को एक जगह किताब के रूप में प्रकाशित किया। इस किताब में उनके लेखों का बिना कोई बदलाव किए मुश्किल शब्दों के अर्थ देते हुए लिप्यंतरण (ट्रांसलिटरेशन) किया गया है।

किताबें

भय नाही, खेद नाही (*500 रुपए)

ये किताब पंडिता रमाबाई के जीवन पर आधारित है। वे 19वीं शताब्दी की प्रख्यात समाज सुधारक थीं। उन्होंने उच्च जाति के वर्चस्व, पुरुष प्रधान समाज की आलोचना की और महिलाओं की शिक्षा के लिए काम किया। उनपर ये किताब सालों के शोध का नतीजा है। उनकी कई दुर्लभ तस्वीरें इसमें उपलब्ध हैं।

ज्ञान की जड़िया लई (*150 रुपए)

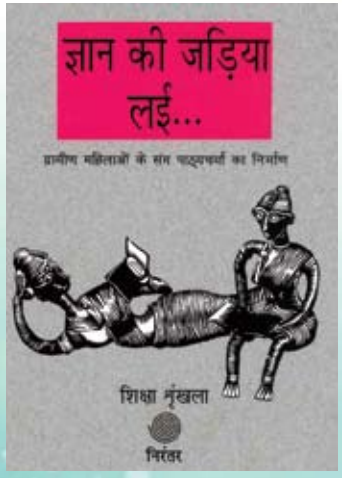

यह किताब ग्रामीण महिलाओं के लिए पाठ्यचर्या निर्माण के अनुभव का विश्लेषण करती है। इसमें उन सिद्धांतों, विचारों, मुद्दों को प्रस्तुत किया गया है जिनसे शिक्षा के क्षेत्र में काम करनेवालों का अक्सर सामना होता रहता है।
(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

पुस्तिकाएं

युवा पिटारा श्रृंखला (*50 रुपए प्रति पुस्तिका)

पिटारा पत्रिका को 25 साल प्रकाशित करने का निरन्तर संस्था का अनुभव युवाओं के लिए इस नई पिटारा श्रृंखला को बनाने में बहुत काम आया है। इन विषय आधारित पुस्तिकाओं में चुने गए विषय पर इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि से सम्बंधित लेखों के साथ कहानियां, आत्मकथाएं, कविताएं आदि भी हैं। साथ ही इनमें जेंडर और सामाजिक समता की भी बात है।

इस विषय आधारित श्रृंखला में निम्नलिखित 12 पुस्तिकाएं शामिल हैं:

- *खाना खज़ाना*
- *ताना बाना*
- *जंगल की छाँव में*
- *हो जाएँ लोट पोट*
- *दुनिया की सैर*
- *नदीनामा*
- *पारसी नु जीवन*
- *हमारी कलम से*
- *रोशनी के द्वीप*
- *दास्तान ए रेडियो*
- *भाषा के रंग ढंग*
- *खेती किसानी*

अमरबेल (*80 रुपए)

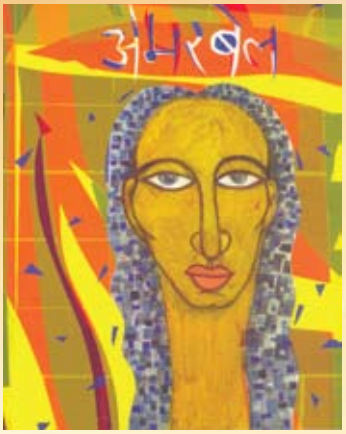

इस किताब में औरतों की ज़िंदगी की अलग–अलग छवियाँ और बारीकियाँ दिखानेवाली आठ कहानियाँ शामिल की गई हैं। अमरबेल की तरह औरत की ज़िंदगी एक तरफ नाजुक है तो दूसरी तरफ जीवटवाली। यही झलकता है इस संकलन की कहानियों में।

पंचरत्न (*45 रुपए)

जाने माने लेखक–लेखिकाओं की पाँच रचनाओं का इस किताब में संकलन किया गया है। कोई रचना व्यंग्यात्मक है तो कोई स्मृति चित्र। किसी में सांप्रदायिक माहौल से सामना होता है तो किसी के केंद्र में है यौनिकता।

नवाब से नंदनी : औरत मर्द की पहचान से परे जीवन

(*70 रुपए)

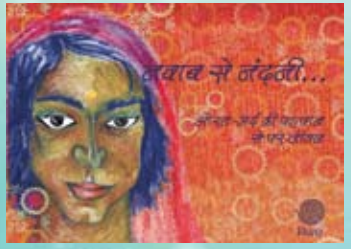

यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो शरीर से तो मर्द है, पर उसकी पहचान मर्द की नहीं। चाल–ढाल, हाव–भाव सब औरत के हैं। ट्रांसजेंडर की सच्चाई पर हिंदी में लिखी गई गिनी चुनी रचनाओं में से यह एक है, जो जेंडर को केवल औरत–मर्द के दो खाकों में बाँटने को चुनौती देती है। यह यौनिकता तथा जेंडर के क्षेत्र की विविधताओं को इंगित करती है। कहानी की धार को किताब में दिए गए चित्र और बढ़ाते हैं।

पुस्तिकाएं

देखो कहीं छूट न जाए (*40 रुपए)

सदाबहार लोककथाओं का संकलन है यह किताब। इसमें हिंदुस्तान के अलग–अलग राज्यों के अलावा दूसरे देशों की लोककथाएँ भी हैं। लोककथाओं को रचनेवाला कोई एक व्यक्ति नहीं है, इनको रचने में समुदाय की हिस्सेदारी होती है। ये पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती जाती हैं।

जानी चीज़ें अनजानी बातें (*70 रुपए)

तरबूज़, पंखा, पान, मकड़ी, बर्फ, पसीना – ये हैं जानी पहचानी चीज़ें। इनके बारे में नई बातें आपको मिलेंगी इस किताब में। कहीं चीजों को गहराई से जानने की कोशिश है तो कहीं इनकी खासियत बताई गई है।

हरी भरी (*50 रुपए)

पेड़ पौधों के बारे में रुचिकर लेख और तथ्य लिए, सुन्दर चित्रों से सजी पुस्तिका।

कहानियाँ नई पुरानी (*40 रुपए)

इस किताब में आठ नई–पुरानी कहानियाँ संकलित हैं। इनमें कुछ पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही लोककथाएँ हैं तो कुछ जाने माने रचनाकारों की कहानियाँ हैं। इनमें कहीं दिखाई देता है अपनापन, प्यार–मुहब्बत और इन्सानियत तो कहीं मुलाकात होती है अन्याय, गैरबराबरी और शोषण से। कुछ कहानियाँ हैं सिर्फ हँसने–हँसाने के लिए।

मंटो (*35 रुपए)

मशहूर लेखक सआदत हसन मंटो की दो कहानियाँ खोल दो और ठंडा गोश्त इस किताब में शामिल की गई हैं। ये दोनों 1947 में बँटवारे के दौरान फैली नफरत और हिंसा का खौफनाक रूप पेश करती हैं। मंटो का कहना था – अगर ये कहानियाँ आपसे बर्दाश्त नहीं होतीं तो समझ लीजिए समाज बर्दाश्त करने लायक नहीं है।

ज़िंदगी इन नज़रों से (*20 रुपए)

औरतों की ज़िंदगी के अलग–अलग पहलुओं को दर्शानेवाली नौ कहानियाँ इस किताब में हैं। जानी मानी लेखिकाओं की कहानियों के साथ लोककथा भी शामिल की गई है।

पुस्तिकाएं

क्या आप जानते हैं (*20 रुपए)

क्या आप जानते हैं 'आँसू क्यों निकलते हैं?' 'क्यों होते हैं हम गंजे?' 'जुगनू क्यों चमकते हैं?' 'कागज़ कैसे बनता है?' रोज़ाना जिन चीज़ों को हम देखते हैं उनके बारे में नई और रोचक जानकारी आप पाएँगे इस किताब में।

सुखिया - हकीकी श्रृंखला, खण्ड 1 और 2

(*20 रुपए प्रति पुस्तिका)

दो खण्डों की श्रृंखला जो जेंडर जस्टिस, समता और आजीविका जैसे मुद्दों पर स्वंय सेवी संगठनों (एस.एच.जी.) के सदस्यों की समझ को मज़बूत करती है।

- *किस्सा सुखिया हक़ीक़ी का*
- *सुखिया हक़ीक़ी और बढ़ते दायरे*

पंख होते तो उड़ जाती (*50 रुपए)

भारत में समय से पहले होने वाले विवाह और बाल विवाह पर पुस्तिका। इसमें कहानी के द्वारा इस तरह के विवाहों से होने वाली समस्याओं और इनके कारणों पर प्रकाश डाला गया है।
(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

साक्षरता प्रवेशिकाएं

बोलती है भाषा (*दो खंड के लिए : 125 रुपए)

यह भाषा शिक्षण पाठ्यचर्या खासकर औरतों और किशोरियों के लिए तैयार की गई है। इसमें औरत की परिवार और समाज में स्थिति के तीन पहलू जोड़े गए हैं – औरत की अपनी पहचान, उसका काम और उसके साथ होनेवाली हिंसा।

- *सिखानेवालों की किताब (*80 रुपए)*
- *सीखनेवालों की किताब (*70 रुपए)*

भाषा का ताना बाना (*200 रुपए)

यह प्रौढ़ महिलाओं और युवतियों को हिन्दी पढ़ाने का पाठ्यक्रम है। ये साक्षरता क्षमताएं तो मज़बूत करता ही है साथ में अपने बारे में, परिवार और समाज के बारे में भी नज़रिया बनाता है।

संग पढेंगे, साथ बढ़ेंगे (एस.एच.जी. प्रवेशिका पैकेज)

इस पैकेज में प्रवेशिका और कार्य पुस्तिका सम्मिलित हैं। इस पठन–पाठन सामग्री को टीचरों और समन्वयकों द्वारा एस.एच.जी. के सन्दर्भ में मूलभूत साक्षरता क्षमताएं विकसित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। कार्य पुस्तिका को इसलिए बनाया गया है ताकि पढ़ने वालियां अपनी इन नई सीखी क्षमताओं का अभ्यास कर सकें।

*साक्षरता प्रवेशिका (*100 रुपए)*
*साक्षरता कार्य पुस्तिका (*50 रुपए)*

साक्षरता प्रवेशिकाएं

संग पढेंगे, साथ बढ़ेंगे (संख्यात्मक प्रवेशिका पैकेज)

इस पैकेज में प्रवेशिका और कार्य पुस्तिका सम्मिलित हैं। प्रवेशिका में मूलभूत गणित समझाया गया है (जैसे गिनती, स्थानीय मान, जमा, घटा, गुणा, भाग)। ये प्रवेशिका इन धारणाओं का रोज़मर्राह की ज़िंदगी से सम्बन्ध बिठाती है। साथ ही जेंडर, जाति, वर्ग और दूसरे सामाजिक आयामों से संख्याओं का क्या सम्बन्ध है इसपर भी प्रकाश डालती है। कार्य पुस्तिका को इसलिए बनाया गया है ताकि पढ़ने वाले अपनी इन नई सीखी क्षमताओं का अभ्यास कर सकें।

*संख्यात्मक प्रवेशिका (*100 रुपए)*
*संख्यात्मक कार्य पुस्तिका (*50 रुपए)*

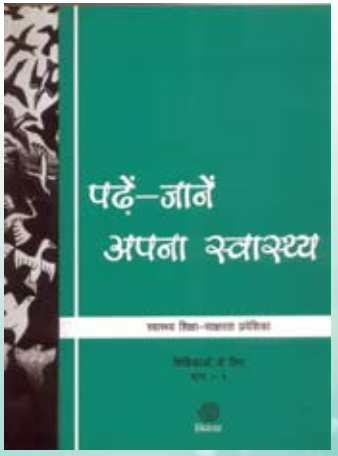

पढ़ें जाने अपना स्वास्थ्य (स्वास्थ्य प्रवेशिका पैकेज)

यह स्वास्थ्य प्रवेशिका मूलभूत साक्षरता क्षमताओं का विकास करती है साथ ही यह स्वास्थ्य सम्बंधित मुद्दों को जेंडर के नज़रिए से उठाती है। इसमें स्वास्थ्य प्रणाली, स्वास्थ्य संगठनों और विभिन्न सरकारी योजनाओं पर बात की गई है। साथ ही शरीर और मस्तिष्क पर समझ भी विकसित की गई है। कार्य पुस्तिका को इसलिए बनाया गया है ताकि पढ़ने वाले अपनी इन नई सीखी क्षमताओं का अभ्यास कर सकें।

*स्वास्थ्य प्रवेशिका (*100 रुपए)*
*स्वास्थ्य कार्य पुस्तिका (*50 रुपए)*

प्रशिक्षण सामग्री / मॉड्यूल

मनरेगा मेट प्रशिक्षण मॉड्यूल : महिला सशक्तिकरण के नज़रिए से (निःशुल्क)

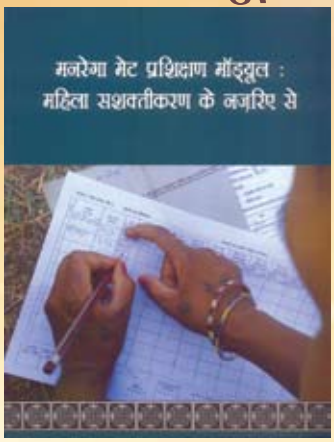

महिला मेटों (मनरेगा में महिला सुपरवाइज़र) को प्रशिक्षित करने के लिए मॉड्यूल।

जेंडर आधारित हिंसा और यौनिकता पर मॉड्यूल

(*100 रुपए)

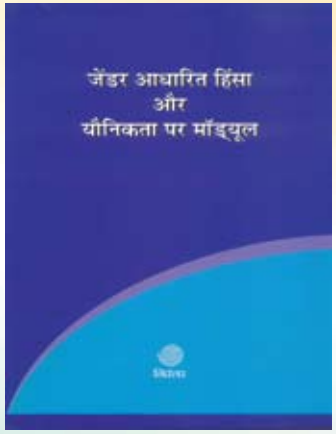

यौनिकता प्रशिक्षणों के लिए एक्टिविटी मॉड्यूल।

खुलती परतें : यौनिकता और हम, भाग 1 और 2

(*200 रुपए प्रति पुस्तक)

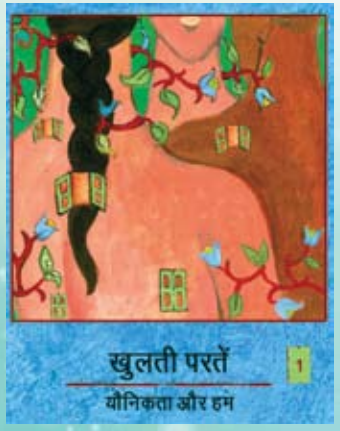

दो भागों मे सन्दर्भ सामग्री जो यौनिकता की मुख्य धारणाओं की गहराई से मगर आसान भाषा में व्याख्या करती है। इसे समुदाय में काम करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए बनाया गया है। इसमें यौनिकता को लेकर जो नज़रिया अपनाया गया है वो बहुत ही सकारात्मक और राजनीतिक है। ये मौजूद तंत्रों और अवधारणाओं की समझ बनाने की कोशिश करती है। यौनिकता सम्बन्धी कायदों को क्यों लागू करने की कोशिश की जाती है जैसे सवालों के जवाब देती है। अधिकारों के हनन पर प्रकाश डालती है और जेंडर व पितृसत्ता के बीच सम्बन्ध पर बात करती है।

प्रशिक्षण सामग्री / मॉड्यूल

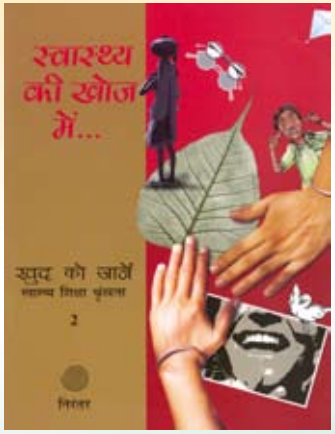

स्वास्थ्य की खोज में

(*3 खंडों के लिए : 500 रुपए)

खंड 1 - एक नज़रिया (*200 रुपए)

इस खंड में स्वास्थ्य पर गहरी और व्यापक समझ बनाने की कोशिश की गई है। स्वास्थ्य को गरीबी, औरतों की स्थिति और सरकारी व्यवस्था के संदर्भ में देखा गया है।

खंड 2 - खुद को जानें (*200 रुपए)

इस खंड में शरीर के विभिन्न तंत्रों और इनसे जुड़ी प्रक्रियाओं की बात की गई है। इसमें बीमारियों के लक्षण और इलाज के साथ उनके कारण भी समझने की कोशिश की गई है।

खंड 3 - अपने को पहचानें (*200 रुपए)

यह खंड प्रजनन और यौनिकता के मुद्दों से परिचय करवाता है। यह औरतों के अपने अनुभवों से शुरू करते हुए एक राजनीतिक विश्लेषण की तरफ ले जाता है।

टेक्स्टबुक रेजिम्स : ए फेमिनिस्ट क्रिटीक ऑफ नेशन एंड आइडेंटिटी

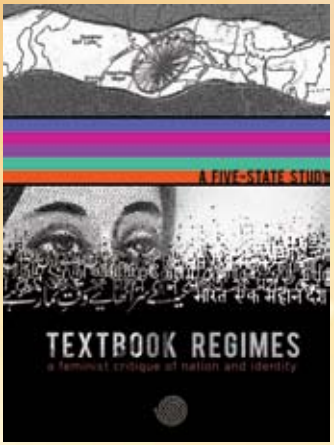

इन अध्ययन रिपोर्टों में पाठ्य–पुस्तक में किस तरह जेंडर, जाति, वर्ग, धर्म आधारित पहचानों का निर्माण होता है, इसका जेंडर के नज़रिए से विश्लेषण किया गया है। इनमें राष्ट्रीय स्तर और तमिलनाडु, गुजरात एवं पश्चिम बंगाल की विभिन्न भाषाओं एवं सामाजिक अध्ययन की किताबों के विश्लेषण हैं।

- टेक्स्टबुक रेजिम्स : ओवरऑल एनालिसिस (*200रुपए)
- टेक्स्टबुक रेजिम्स : तमिलनाडु (*150 रुपए)
- टेक्स्टबुक रेजिम्स : पश्चिम बंगाल (*150 रुपए)
- टेक्स्टबुक रेजिम्स : गुजरात (*150 रुपए)

युवाओं के लिए यौनिकता शिक्षा (*50 रुपए)

यह किताब युवाओं के लिए यौनिकता शिक्षा के मुद्दे पर ज़ोर देती है। स्त्री संगठनों, बाल अधिकार समूहों, यौन अधिकार समूहों और शिक्षाविदों के सुझावों एवं समझ पर आधारित इस पुस्तक में किशोर–किशोरियों की शिक्षा के वर्तमान तरीकों की समीक्षा की गई है। यौनिकता शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए क्या करना चाहिए, यह भी इस किताब में बताया गया है।
(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

अनुसंधान रिपोर्ट

स्वयं सहायता समूह पर अध्ययन

(*दो खंडों के लिए : 150 रुपए)

खंड 1 – स्वयं सहायता समूह में सशक्तीकरण, गरीबी उन्मूलन और शिक्षा की पड़ताल : गुणात्मक अध्ययन

(*120 रुपए)

व्यापक स्तर पर फैले सूक्ष्म ऋण (माइक्रो क्रेडिट) आधारित स्वयं सहायता समूहों का सशक्तीकरण और गरीबी उन्मूलन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? इस सवाल का जवाब शिक्षा के नज़रिए से किया गया यह गहन गुणात्मक अध्ययन देता है – औरतों के जीवन की सच्चाइयों के स्तर पर और जेंडर व विकास की अवधारणाओं के स्तर पर।
(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

*खंड 2 – स्वयं सहायता समूह के तहत सत्ता और साक्षरता : परिमाणात्मक अध्ययन (*60 रुपए)*

16 राज्यों में 2,750 सूक्ष्म ऋण (माइक्रो क्रेडिट) आधारित स्वयं सहायता समूहों का यह सर्वेक्षण बताता है कि किस तरह समूह के सदस्यों को सशक्तीकरण के लिए आवश्यक सीखने के मौके नहीं मिलते। साथ ही, इस बात के भी पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि नेतृत्व, सीखने के मौकों और ऋण की प्राप्ति में साक्षरता एक महत्त्वपूर्ण कारक बन जाती है।
(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

एक्सप्लोरिंग द एवरीडे : एथनोग्राफिक अप्रोचेज़ टू लिटरेसी एंड न्यूमरेसी (*150 रुपए)

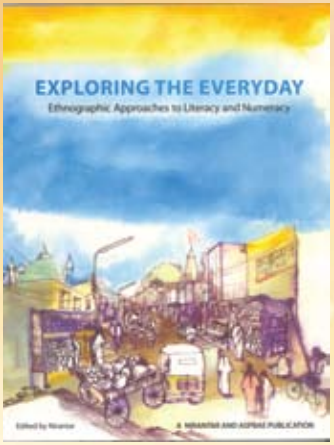

लोगों की रोज़मर्रा की जिंदगी में मौजूद साक्षरता और अंक ज्ञान की अवधारणाओं और दृष्टिकोण को यह किताब सामने लाती है। सीखने–सिखाने की पद्धतियों और सामग्री को मज़बूत करने के लिए संगठनों द्वारा एथनोग्राफी का इस्तेमाल किया गया है। यह किताब उनके अनुभवों को भी दर्ज करती है।

नए हुनर, नई मंज़िलें : मुसलमान और दलित महिलाओं के लिए नेतृत्व विकास (*निःशुल्क)

ये किताब और फिल्म निरन्तर और सनतकदा (लखनऊ) के द्वारा आयोजित नेतृत्व विकास कार्यशाला की एक झलक दिखाती है। इस कार्यशाला को जिस समूह के साथ किया गया था उसमें लखनऊ और बाँदा से अधिकतर मुसलमान महिलाएं थीं। ये किताब दिखाती है कि किस तरह आई सी टी और नए मीडिया को जेंडर, पहचान, विकास और नागरिकता जैसे महिलाओं से सम्बंधित मुद्दों पर काम करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

अनुसंधान रिपोर्ट

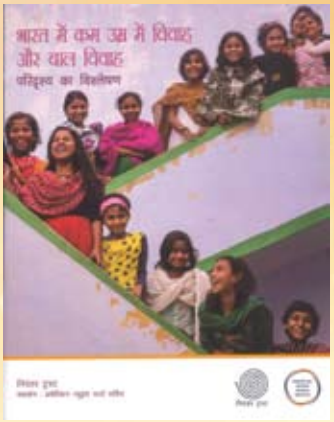

कम उम्र में विवाह और बाल विवाह पर रिपोर्ट

निरन्तर द्वारा 2014 में किए गए अध्ययन की ये रिपोर्टें भारत में होने वाले कम उम्र में विवाह और बाल विवाह के आंकड़ों, कारणों, प्रभावों और हस्तक्षेपों पर प्रकाश डालती हैं।

- *भारत में कम उम्र में विवाह और बाल विवाह : परिदृष्य का विश्लेषण (*150 रुपए)*
- *भारत में कम उम्र में विवाह और बाल विवाह : सारांश (*50 रुपए)*

(अंग्रेज़ी में भी उपलब्ध)

पत्रिका

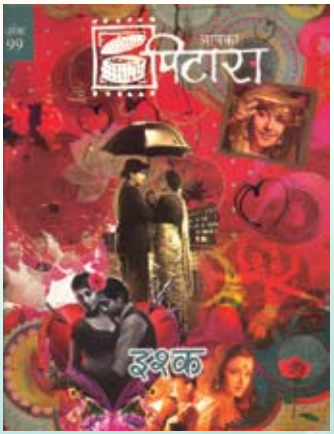

आपका पिटारा

आपका पिटारा सरल हिंदी में प्रकाशित होनेवाली द्वैमासिक पत्रिका है। जिसे 1994 से 2010 तक हिंदी भाषी राज्यों में प्रौढ़ पाठकों और किशोर–किशोरियों के लिए नियमित रूप से प्रकाशित किया गया। अपने नाम की ही तरह पिटारा पत्रिका बहुत कुछ समेटे हुए है अपने पन्नों में। हर अंक में आपको मिलेंगी ताज़ा खबरें, कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले और तस्वीरें।

- *एक प्रति : 10 रुपए*
- *अंकों के सजिल्द संकलन : 200 रुपए प्रति जिल्द (प्रत्येक जिल्द में 10 अंक)*
- *9 जिल्दों का सेट लेने पर सहयोग राशि : 1600 रुपए*

अगर आप निरन्तर के प्रकाशन मांगना चाहते है तो नीचे दिए गए पते या ईमेल पर संपर्क करें :

निरंतर

बी – 64, दूसरी मंज़िल,
सर्वोदय एन्क्लेव,
नई दिल्ली – 110017, भारत
फोनः (91–11) 2–696–6334; फैक्सः (91–11) 2–651–7726
ईमेलः nirantar-mail@gmail-com
वेबसाइटः www.nirantar.in